जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
☎ : (०२०) २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.
संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४७ वे ❖ अंक १२ वा ❖ ऑगस्ट २०१६ ❖ वीर संवत २५४२ ❖ विक्रम संवत २०७२

या अंकात — पान नं.

- स्वतंत्रता का महत्त्व — १५
- दादावाडी टेंम्पल ट्रस्ट, पुणे — १९
- श्रमणसंघीय चातुर्मास सूची — २०
- पूना मर्चन्ट चेंबर - राज्यव्यापी परिषद — २३
- संपत्ती जाहीर करा व कारवाई टाळा — २३
- कव्हर तपशील — २४
- गागर में सागर — २५
- ।। जिनेश्वरी ।। — ३१
- कर्तव्य कर्म करो — ४४
- धरम के नाम पर — ५१
- माझ्या भारतवासीयांनो — ५६
- न्याय युक्त धन — ५७
- मैत्रीचा सुगंध — ६७
- महत्त्व आता जाणवते आहे — ६९
- चातुर्मास प्रवास क्यों ? — ७९
- विचारधन — ८०
- ऐसी हुई जब गुरुकृपा - उत्थान कर — ८३
- कडवे प्रवचन — ८५
- जीवन दर्शन — ८५
- मैं कौन हूँ ? — ८७
- अल्पसंख्याक का अधिकार आरक्षण का नहीं हमारे संरक्षण का हैं। — ९२
- अन्तकृत सूत्र के प्रश्नोतर — ९५
- जबकि — ९७
- संतोष तारा जैन चॅरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर — १०३
- जैन सोशल ग्रुप पुणे मिडटाऊन — १०४
- जैन कॉन्फरन्स शपथविधी, नाशिक — १०५
- रमेश डाईंग, पुणे — १०७
- मार्केट यार्ड युथ व्हिजन — १०७
- जय आनंद महावीर युवक मंडळ, अहमदनगर — १०८
- जैन सोशल ग्रुप पुणे - पाणपोई — १०८
- जैन सोशल ग्रुप इंटरनॅशनल फेडरेशन — १११

- जैन समाजाचे कलेक्टरला निवेदन – जामखेड, आष्टी ११२
- श्री विश्वासमुनिजी – ५१ उपवास ११३
- चातुर्मास बातम्या ११६
- घर को बनाएँ अपना मंदीर १२३
- जैन ओबीसीच्या समस्या सोडविणार १२४
- पर्यावरण व जीवरक्षा का संदेश देता – वर्षावास १२९
- उत्कृष्ठ जीवन के लिए खुद को अभिव्यक्त करें १३१
- जागरुकतेमुळे सांस्कृतिक मंत्रालयाने केली दुरुस्ती १३२
- नातं एक जीवन सूत्र १३३
- भूजल पुनर्भरण अभियान – एक संकल्प १३५
- जो सत्य है वही मेरा है १३६
- देखो – मगर पर्दा उठाकर १३७
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकीय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी –२२०० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी – १३५० रु.

❖ वार्षिक वर्गणी – ५०० रु. ❖ या अंकाची किंमत ५० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने / On line / RTGS / AT PAR चेक / पुणे चेकने / मनीऑर्डर / ड्राफ्टने / 'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे ग्राहक बना !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

जैन जागृति – वर्गणीचे दर

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

वर्गणी व जाहिरात – रोख / मनिऑर्डर / ड्राफ्ट / AT PAR चेक / पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

JAIN JAGRUTI - BANK ACCOUNT DETAILS

Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**

Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ **भोसरी, चिंचवड, निगडी** – श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- ❖ **पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी** – श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३०००००८१
- ❖ **गुरूवार पेठ, पुणे** – श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ **धनकवडी, पुणे** – श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
- ❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे** – निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ **सदाशिव पेठ, परिसर, पुणे** – सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ **वडगाव शेरी, पुणे** – सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ **वडगाव मावळ, पुणे** – श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ **खडकी, पुणे** – श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव** – श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२११३००५५९
- ❖ **दापोडी, पुणे** – श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ **नांदेड सिटी, पुणे** – श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- ❖ **दौंड, श्रीगोंदा** – श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- ❖ **घोडनदी, जि. पुणे** – श्री. पारसमलजी बांठिया, मो. : ९२२५५४२४०६
- ❖ **अहमदनगर** – श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका** – श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ **सोनई** – श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१
- ❖ **औरंगाबाद** – श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ **मुंबई खारघर**– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ **धनसोली, नवी मुंबई** – श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
- ❖ **नाशिक** – श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- ❖ **नाशिक** – मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ **बीड** – श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- ❖ **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ **श्रीरामपूर** –श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ **लासलगाव** – श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- ❖ **बारामती**– डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- ❖ **अंमळनेर, जि. जळगाव** – श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ **जळगाव** – श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ **धुळे** – श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ **शहादा, जि. नंदुरबार** – श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर** – श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ **मिरज, जि. सांगली** – श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ **कोल्हापूर** – सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२५४२२५३
- ❖ **सातारा व सातारा जिल्हा** – श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

स्वतन्त्रता का महत्व

लेखक : आचार्यप्रवर श्री हीराचंद्रजी म.सा.

अनन्तकाल की पराधीनता को हटाकर ज्ञान क्रिया के माध्यम से आत्मभाव जगाने वाले सर्वज्ञ सर्वदर्शी अरिहंत भगवन्तों, कर्म की इसी पराधीनता को मिटाने के लिए महाव्रत, समिति-गुप्ति की आराधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि- कोटि वन्दन।

इन्द्रियों की अधीनता एवं पापों की पराधीनता से मुक्ति तथा कषाय की मंदता के लिए प्रतिदिन वीरवाणी के माध्यम से सन्तों के प्रेरक प्रवचन हो रहे हैं। आज का दिन बाहर की पराधीनता मिटाने का दिन कहा जा रहा है। भीतर की पराधीनता में अभी तक जकड़े हुए हैं। इस पराधीनता को मिटाने के लिए एक नहीं अनेक दृष्टान्त आपके सामने रखे गए। धर्मरुचि अणगार ने कडुवा तुम्बा पीकर अनेकानेक प्राणियों की रक्षा की। सत्यवादी हरिशचन्द्र ने राजपाट ही नहीं छोड़ा, बल्कि अपने आपको बाजार में बिकने के लिए खड़ा कर दिया। दूसरों के द्वारा कलंक का आक्षेप लगाने के बावजूद शीलरक्षा के लिए सुदर्शन सेठ ने शूली पर चढ़ना स्वीकार किया। आपकी भाषा में भारत १९४७ में आजाद हो गया। कितने बरस हो गये? स्वतंत्रता दिलाने वालों को उम्मीद थी कि अब हमारी सरकार बनने के बाद हिंसा के जो तांडव हो रहे हैं वे बन्द हो जायेंगे तथा भ्रष्टाचार, मिलावट, भाई-भाई को मारने की प्रवृत्ति में परिवर्तन आयेगा। किन्तु आज भी समाचारपत्र इन घटनाओं से भरे रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव भगवन्त (श्री हस्तीमलजी महाराज सा.) बताते थे कि १९४७ में वे अजमेर में थे। हर व्यक्ति अपना स्वार्थ छोड़कर देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानी देने को उत्सुक था। शौकत अली, मौहम्मद अली दोनों सगे भाइयों ने विदेशी वस्तुओं की सरे आम होली जलाई तथा जिस किसी के पास विदेशी कपड़ा देखा उसे उतारा और आग के हवाले कर दिया। किसलिए? पराधीनता मिटाने के लिए। न जाने कितने देशभक्तों ने स्वतंत्रता के संग्राम में न जाने कितने-कितने दुख झेले। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे जैसे अनेक वीरों को याद किया जाता हैं। १८५७ की क्रांति उस समय का हिस्सा है। झाँसी में रहनेवाले अमीचंद बाँठिया, हुकमीचन्द कानूनगो उन्हीं के एक साथी मुनीर बेग ने साथ रहकर इस आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। हैदराबाद के नवाब के पास इन तीनों को पकड़ने के लिए उस समय १० लाख रुपये का ईनाम रखा गया जब १ पैसे में जलेबी से पेट भर जाता था। इन्हें खोजते-खोजते अंग्रेज थक गये तो आखिर अत्याचार का सहारा लिया गया। जालियाँवाला बाग जैसे अनेक उदाहरण आपने सुन रखे हैं। पर इस जैन भाई अमीचन्द्र ने नगर सेठ होते हुए भी देश की आजादी के लिये अपना पूरा धन समर्पित कर दिया। जैसा कि अभी योगेश मुनिजी कह गये - घर का भेदी लंका ढ़हाये। देश के किसी भेदी ने पता बता दिया। झाँसी के वीरों को ढूंढते हुए अंग्रेज पुलिस पहुँची। पिता को पत्थरों - डण्डों से पीटा। जब तक वे मेरे नहीं, उनको पीटते रहे। इनके लड़कों को पुलिस लोहे की कीलों वाले जूतों से ठोकते हुए श्मशान तक ले गयी। इतना मारा- इतना मारा कि लड़के अपने आप खड़े नहीं हो सके। वैर की आग में ऐसा हो जाता है।

एक किस्सा कहने जा रहा हूँ। अमीचंद बाँठिया की माता को कोर्ट में लाया गया। कोर्ट में अमीचंद के सामने अन्य लोगों से बलात्कार करवाया गया। पूछा, बता तेरे साथ कौन-कौन हैं? यह सब किसके सामने

हो रहा हैं? नाम बताना तो दूर, अमीचन्द यह कहकर आ गया कि भारत मेरी माँ हैं। ये मेरे बंधु हैं। इनकी आजादी के लिए यह सब सहन करने को तैयार हूँ। इसी अमीचंद के पैर की चमड़ी उतारकर उसे काँटों पर चलाया गया, उल्टा लटकाकर बुरी तरह से मारा - पीटा गया, बर्फ की शिला पर रखा गया, विभिन्न अंगों पर कोडे बरसाये गये। सुनते-सुनते रौंगटे खड़े हो जायें, ऐसा अत्याचार।

एक जैन की बात कह रहा हूँ। आज उन कुर्बानी करने वालों की बातें सुनकर हमारे मन में क्या चल रहा है? पैसे के लिए हर चीज में मिलावट कर रहे हैं। स्वतंत्र भारत में कौनसा ऐसा व्यापारी है जो मिलावट नहीं करता? सुना है धनिये में गधे की लीद मिलाई जाती हैं, गेहूँ में कँकर कौन खरीदेगा? कौन खायेगा? किसान अधिक दूध के लिए इंजेक्शन लगाता है। भले ही गाय को कितनी ही वेदना हो। अधिक खेती के लिए कीटक नाशकों का बहुतायत से प्रयोग हो रहा है। क्या किसान एवं मिलावट करने वाला नहीं खायेगा? खाने वाले कौन? किसके लिए अनैतिक पैसा कमाया जा रहा है?

इस देश में अपने भाइयों को बचाने के लिए हजारों लोगों ने बलिदान दिया। आज आप क्या कर रहे हैं? आप अपने परिवार के लिये दूसरों को कितना धोखा दे रहे हैं? अपने बच्चों के लिए आप क्या कर रहे हैं? जिस बापू को रेल में बैठने पर ठोकर मारी गयी, तिलक को भारत माँ की जय बोलने पर ३ माह की सजा दी गयी। न जाने कितनी यातनाएँ दी गई। किसलिये? आप उनके त्याग एवं बलिदान को याद कीजिए तथा स्वतन्त्र भारत में भ्रष्टाचार एवँ अनैतिकता को तिलांजलि दीजिए।

आज आप स्वतंत्र होते हुए भी स्वच्छंद हैं। स्वतंत्रता व स्वच्छंदता में क्या भेद है, उसे समझें। अपने स्वार्थ में ही जीने वाला स्वच्छंद है। अपनी मर्यादा में अपने कर्तव्य में जीने वाला स्वतंत्र है। आजादी के बाद स्वच्छन्दता बढ़ती नजर आ रही है। मैंने स्वाध्यायी शिबिर में कहा था। घर का मालिक कौन है? घर का नौकर कौन? नौकर कहे अनुसार काम करता रहता है। मालिक सबका ध्यान रखते हुए कार्य करता है। नौकर को कहा जाएगा, वह उसे कर देगा। फिर खुद की जिम्मेदारी पूरी। मालिक कौन? जिसको अपने परिवार के सुख-दुख का खयाल है। आज की स्थिति देखिए। छह-छह महीने हो जाते हैं बाप-बेटे में बात हुए। बाप को बेटे से बात करने की फुर्सत नहीं है और न ही बेटे को बाप से बात करने की। जिस बेटे के लिए बाप ने झूठ का सहारा लिया, उस बेटे से बात करने के लिए समय लेना पड़ता है। मैं कलेक्टर व मंत्री की बात नहीं कर रहा। परिवार वह हैं जिसमें हर सुख-दुख में सहभागी बना जाए, नहीं तो अनाथालय एवं परिवार में कोई फर्क नहीं रहेगा। दूसरों के श्रम का भी मूल्य समझिए। जो धान खा रहे हैं, उसमें कितनी मेहनत लगी है, कपड़ा जो तन पर है, उसके निर्माण में कितने हाथ लगे हैं। गेहूँ तैयार करनें में कितनी मेहनत है? ऊबड़-खाबड़ मिट्टी को मिलाकर बीज डालने के पहले बारिश का इन्तजार, बीज डालने के बाद रखवाली, भरी सर्दी में नंगे बदन पाणत करना तब जाकर फसल तैयार होती है। धान कैसे आया? कपड़े कैसे आये एक-एक को तैयार करने में न जाने कितने लोगों का परिश्रम लगता है।

देश की स्वतंत्रता-प्राप्ति में कितनी माताओं की गोद उजड़ी? कितने जवान देश के लिए शहीद हुए? कितने संकट के बाद आजादी मिली? आज इस आजादी का मतलब क्या? मैंने पढ़ा है बाल गंगाधर तिलक आजादी के मतवाले थे। उनकी मंशा थी कि आजादी के बाद हमारा अपना विधान बनेगा, देश में सत्य, अहिंसा के सिद्धांतों पर चलने वाली सरकार बनेगी, गोहत्या बंद हो जायेगी। आज ६६ वर्ष पूरे हो गये, गोहत्या बंद नहीं हुई, कत्लखाने नये खुले। बड़े खेद के साथ कह रहा हूँ कि कभी जैनों की परिभाषा यह थी

कि रत्नों की पोटली भी मिल जाए तो जाकर उसके पास पहुँचायी जाती थी, जिसकी वह है। आज स्वतंत्र भारत की बात कहूँ, किसी के हाथ से कई चीज नीचे गिर जाए तो गायब होने में देर नहीं लगती, धर्मस्थान से दुप्पटे व चोलपट्टे गायब हो जाते हैं। धर्मास्थानको एवं मन्दिरों से जूते-चप्पल चोरी हो जाते हैं। ये परतंत्रता में नहीं स्वतंत्रता में ही हो रहा है।

स्वतंत्रता किसमें एवं स्वच्छंदता क्या? अपने सुख के लिए जीना स्वच्छदन्ता है। अपनी आत्मा का तंत्र मर्यादा का तंत्र है, यही स्वतन्त्रता है। स्वच्छंद लोग नारकी बन सकते हैं। क्या कह रहा हूँ? रावण को समझाने वाले मंदोदरी, विभीषण समझाते-समझाते थक गये, किन्तु वह खुद मरा सो मरा, पूरी लंका को ले डूबा।एक दुर्योधन के दुराग्रह के कारण १८ अक्षौहिणी सेना स्वाहा हो गयी। कौरव एवं पाण्डव में युद्ध के कारण क्या थे? भाई पाण्डवों ने राज्यों के बदले ५ गाँव माँगे, पर दुर्योधन द्वारा सूई की नोंक के बराबर जमीन नहीं दी गई। क्या वह जमीन साथ लाया था? साथ लेकर जायेगा? फिर लड़ाई किसलिए? भाई-भाई लड़ रहे हैं, क्यों? एक भाई ने एक पत्थर आगे लगा दिया तो झगड़ा हो जाता है। एक बात बताओ, यहाँ से कौन जमीन साथ ले जायेगा? कहा गया है-

धरती अखण्ड कवाँरिया, वर दिया कई लाख।
मुसलमान गड गये, हिन्दु हो गये राख।।

यह दिल्ली की कुर्सी अखण्ड कँवारी है, न जाने कितने आये, न जाने कितने चले गये, कुर्सी वहीं की वहीं। कौन है जो कुर्सी को साथ ले जायेगा? एक पत्थर पटक देने के मामले में लड़ाई हो जाती है। कहते हैं कि गाँवों में खेत की बाड़ हर फसल पर आगे बढ़ा दी जाती है। रास्ता छोटा हो जाता है। किसान, मेहमान, मेजबान कौन जमीन साथ लेकर जायेगा?, कोई नहीं।

दिल्ली का तख्त किसका है? कौन साथ ले जायेगा? क्या जमीन की बात कहूँ, क्या धन की बात कहूँ? मनुष्य नंगा आया था, एक सूत का धागा भी साथ लेकर नहीं आया और जाएगा तब भी खाली हाथ जाएगा। आप अपनी मर्यादा में जीवनयापन करिए। आपके मन में खोट है तो दूसरा भी होशियार है।

आज अपने पर अनुशासन रूपी स्वतन्त्रता की आवश्यकता है। दूसरों को समझाने या तारने के बजाय खुद को तारने का प्रयत्न करें। दूसरों का भला करने के बजाय पहले अपना भला करें। लोभवृत्ति से न अपना भला हो रहा है न देश का भला हो रहा है। आज चपरासी से लेकर मंत्री तक भ्रष्टाचार में लिप्त है। कोई छोटा चोर तो कोई बड़ा चोर। सबने अपनी ईमानदारी खो दी है। इसलिये अपना भला करो। अपने पर दया करो, सब पर दया हो जायेगी।

स्वतंत्रता के लिए देशभक्तों की कुर्बानी देख ली। धर्म की रक्षा के लिये धर्मरुचि अणगार, शीलव्रती रानियों एवं न जाने कितनों का त्याग जान लिया। बाडमेर जाकर आया। वहाँ सुना कि भूख से माँ बीमार है, भाई की पढ़ाई के लिए फीस नहीं है, फिर भी आदेश की घण्टी बजते ही सैनिक मोर्चे पर जाने के लिये कुर्बानी देने निकल जाते हैं।

अपने आपको स्वतंत्र करने की भावना जगाई जा रही है। हर आदमी ईनामदार बन जाए यही स्वतन्त्रता का सही रूप है। किन्तु यहाँ तो चोर, साहूकार को चोर बना रहा है। धर्म का उपदेश देने वाला स्वयं पाप कर रहा है। तब उत्थान कैसे हो? करोड़ों की चोरी करके लाखों का दान देकर नाम लिखा दिया तो किसी मतलब का नहीं है। स्वतंत्र बनने के लिए पाप के बजाय धर्म में लग जायें तो देश की सच्ची आजादी का अहसास होगा। •

जैन जागृति - सप्टेंबर २०१६
पुर्यषण अंक

कव्हर तपशील - ऑगस्ट २०१६

❖ **दादावाडी टेंम्पल ट्रस्ट , पुणे - चातुर्मास**

जैन श्वेतांबर दादावाडी टेंम्पल ट्रस्ट, पुणे येथे राष्ट्रसंत श्री. ललीतप्रभसागरजी, श्री. चंद्रप्रभसागरजी आदी ठाणा यांचा चातुर्मास संपन्न होत आहे. १७ जुलै रोजी चातुर्मास प्रवेश झाला. भव्य वरघोडा श्री. ओमप्रकाशजी राका यांच्या मुकुंदनगर निवासस्थाना पासून सुरू होऊन सुजय गार्डन, मित्रमंडळ चौक, दादावाडी येथे आला.

राष्ट्रसंत श्री. ललीतप्रभसागरजी व श्री. चंद्रप्रभसागरजी यांचे आध्यात्मिक प्रवचन रोज सकाळी ८.४५ ते १०.१५ या काळात गणेश क्रिडा मंच, स्वारगेट येथे होत आहे. चातुर्मासाच्या पहिल्या दिवसापासून गणेश क्रिडा मंचचा भव्य हॉल लोकांच्या उपस्थितीमुळे कमी पडत आहे. अनेक जण मंचच्या समोर जमिनीवर बसुन, उभे राहून व्याख्यान ऐकत आहेत.

❖ **श्री. राजस्थानी जैन संघ, पुणे – चातुर्मास**

श्री. राजस्थानी जैन श्वेतांबर संघ, सोमवार पेठ पुणे येथे गच्छाधिपति शांतीदूत आ. भ. श्रीमद् विजय नित्यानंद सुरीश्वरजी म.सा., तपचक्रवर्ती आ. भ. श्रीमद्विजयवसंत सूरीश्वरजी म.सा. आदि साधू–साध्वी यांचा चातुर्मास संपन्न होत आहे. चातुर्मास प्रवेश १५ जुलै रोजी झाला.

❖ **आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा. – चातुर्मास**

ध्यानयोगी युगप्रधान आचार्य सम्राट पूज्य श्री. शिवमुनिजी म. सा. मंत्री श्री. शिरीषमुनिजी म. सा. आदि ठाणा–७ यांचा भव्य चातुर्मास भीलवाडा राजस्थान येथे संपन्न होत आहे.

❖ **मेवाड श्री संघ, पुणे – चातुर्मास**

मेवाड श्री संघ पुणे येथे मेवाड गौरव श्रमणी प्रवर्तिनी डॉ. श्री. चंदनाजी म. सा., प्रखरवक्ता डॉ. अक्षयज्योतीजी म.सा. आदि ठाणा–८ यांचा चातुर्मास मेवाड भवन जैन स्थानकात संपन्न होत आहे.

❖ **जैन कॉन्फरन्स समारोह – नाशिक**

जैन कॉन्फरन्स राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. मोहनलालजी चोपडा व राष्ट्रीय कार्यकारिणीचा शपथग्रहण समारोह भव्य कार्यक्रमात ३ जुलै रोजी नाशिक येथे संपन्न झाला. यावेळी ध्वजारोहन करताना श्री. मोहनलालजी चोपडा श्री. जे. डी. जैन, श्री. सुवालालजी बाफना, श्री. केशरीमलजी बुरड, श्री. अविनाशजी चोरडिया, श्री. शांतीलालजी कोटेचा, श्री. पारसजी मोदी इ. मान्यवर.

यावेळी नूतन अध्यक्ष श्री. मोहनलालजी चोपडा यांनी नवनिर्वाचीत महामंत्री प्रा. डॉ. अशोककुमार पगारीया, कोषाध्यक्ष श्री. महेश बोकरीया, राष्ट्रीय अध्यक्षा सौ. रूचिरा सुराणा, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री. शशीकुमार (पिंटु) कर्नावट या पदाधिकाऱ्यांना शपथ देऊन सन्मानित केले.

❖ **दी पूना मर्चन्ट चेंबर, पुणे**

दी पूना मर्चन्ट चेंबर तर्फे आडती संदर्भात राज्यव्यापी व्यापारी परिषदचे १४ जुलै रोजी पुणे येथे आयोजन केले. या परिषदेमध्ये सुमारे ५०० व्यापारी संपूर्ण महाराष्ट्रातून आले होते. यावेळी दीपप्रज्ज्वलन करतांना चेंबरचे अध्यक्ष श्री. प्रवीणजी चोरबेले, उपाध्यक्ष श्री. जवाहरलालजी बोथरा, सचिव श्री. अशोकजी लोढा, श्री. वालचंदजी संचेती, श्री. पोपटलालजी ओस्तवाल, श्री. अजित सेठिया, श्री. मोहन गुरनानी इ. मान्यवर

❖ **रमेश डाईंग, पुणे**

पुणे येथील शेठ चिमणलाल गोविंददास मेमोरियल ट्रस्ट तर्फे पुणे येथील रमेश डाईंगचे श्री. गिरीष शहा व श्री. मिलींद शहा यांना उद्यमगौरव पुरस्कार ३ जुलै रोजी पालकमंत्री श्री. गिरीषजी बापट व डॉ. विश्वनाथजी कराड यांच्या हस्ते देण्यात आला.

❖ **कर्नल श्री. ललीत रॉय सन्मान – पुणे**

जैन सोशल ग्रुप पुणे मिडटाऊन तर्फे वॉर ॲण्ड पीस या कार्यक्रमा मध्ये शिवशाहीर श्री. बाबासाहेब पुरंदरे यांच्या हस्ते वीरचक्र विजेता कर्नल श्री. ललीत रॉय यांना ''परम योध्दा कृतज्ञता पुरस्कार'' देऊन सन्मानित करण्यात आले. यावेळी सोबत ग्रुपचे अध्यक्ष श्री. विनोद शहा, संस्थापक अध्यक्ष शरद शहा इ. मान्यवर

❖ **श्री. विजयची मर्लेचा – पुरस्कार**

पुणे येथील धडाडीचे कार्यकर्ते श्री. विजयकुमारजी मर्लेचा यांना बाबु जगजीवनराम कला संस्कृती व समता ॲकडमी तर्फे समता कॉन्फरन्स २०१६ मध्ये दिल्ली येथे भ्रष्टाचार निर्मुलन व समाज कार्याबद्दल ''बाबु जगजीवनराम नॅशनल सन्मान पदक'' देऊन सन्मानित करण्यात आले. मा. केंद्रियमंत्री डॉ. सत्यनारायण फटीयाजी, श्री. सुरजभान कटारीया, श्री. सुभाषजी कुद्रा इ. मान्यवरांच्या हस्ते सन्मान करण्यात आला. ●

गागर में सागर

लेखक : आचार्य श्री रत्नसेन सुरीश्वरजी म.सा.

✼ जीवन में व्रत, नियम बाड़ हैं और गुरू भगवंत छत्र हैं। जिसके मस्तक पर गुरू भगवंत रुपी छत्र है वही सुरक्षित रह सकता है। कुमारपाल महाराजा, आमराजा आदि बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के ऊपर भी गुरू भगवंत का छत्र था।

✼ 'छ' री = (नियम) का पालन पैदल संघ में होता है। 'छ' री = (नियम)=१. पादचारी (पैदल चलना) २. एकल आहारी (एकासना करना) ३. सचित परिहारी ४. ब्रह्मचारी ५. आवश्यककारी (प्रतिक्रमण करना) और ६. भूभिसंथारी।

✼ आनंदघन विरचित स्तवन ज्ञानयोग प्रधान है और प.पू. महामहोपाध्याय यशोविजयजी म.सा. विरचितस्तवन भक्तियोग प्रधान है।

✼ जैनदर्शन में दो प्रकार के तीर्थ हैं। १. स्थावर तीर्थ ✼ जंगमतीर्थ

✼ स्थावर तीर्थ = जो तीर्थ एक ही जगह पर स्थिर है, उसे स्थावर तीर्थ कहते हैं। उदा. शत्रुंजय, गिरनार, सम्मेतशिखरजी आदि...

✼ जंगम तीर्थ = जो एक ही जगह पर स्थिर न हो उदा. साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका।

✼ जहाँ समर्पण की भावना होती है वहाँ कम - ज्यादा का विचार नहीं आता है।

✼ जगत् में सबसे उँचा स्थान गुरू भगवंत का है अत: किसी भी मंदिर में प्रोग्राम आदि में गुरू भगवंत के आसन के गायक (Singer) (वाद्ययंत्र बजाने वाले) आदि का स्थान उँचा नहीं होना चाहिए । अर्थात् गुरू भगवंत नीचे बैठे हों और (Singer) आदि कुर्सी पर बैठे हों तो गुरूभगवंत की आशातना का दोष लगता है।

✼ कृष्ण महाराज को १८,००० साधु भगवंतों को वन्दन से ३ लाभ हुए।

✼ क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति २. तीन नरक कम हुई ३. तीर्थंकर नामकर्म का बंध।

✼ सज्जनपुरुष के वचन पत्थर की लकीर के समान होते है. पानी की लकीर के समान नहीं । अर्थात सज्जन पुरूष ग्रहण की हुई प्रतिज्ञा का अवश्य निर्वाह करते हैं।

✼ जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है वैसे-वैसे पापबुद्धि बढती है। जीवन में सबसे बड़ा पाप स्वार्थ है।

✼ पशु पेट के लिए खाता है। इन्सान पेट के लिए कम खाता है लेकिन जीभ के लिए ज्यादा खाता है। इसलिए शरीर में बीमारियाँ ज्यादा होती हैं। जीभ के स्वाद में मिठाई और नमकीन आते हैं जो पाचन में भारी हैं।